# राजस्थानी लोकगाथाएं

## एक विवेचन

डॉ. कृष्णकुमार शर्मा

भारतीय विद्या मन्दिर
सिम्पलेक्स इंफ्रास्ट्रक्चर्स लि०
कोलकाता

# लेखकीय निवेदन

प्रस्तुत ग्रन्थ राजस्थानी लोकगाथाओं का प्रथम अध्ययन है। राजस्थानी का संपूर्ण लोकगाथा साहित्य मैंने पा लिया है, ऐसा दावा मैं नहीं कर सकता। किन्तु सभी प्रचलित लोकगाथाएँ मैं प्राप्त कर सकूं, यह मेरा प्रयत्न रहा है ।

राजस्थान विश्वविद्यालय को यह शोधप्रबन्ध जिस रूप में प्रेषित किया गया था, उससे प्रस्तुत ग्रंथ किंचित भिन्न है। पहले इसमें १३ अध्याय और तीन परिशिष्ट थे, अब ११ अध्याय और २ परिशिष्ट हैं। शोधप्रबन्ध के तृतीय और एकादश अध्यायों की विषय वस्तु को प्रस्तुत ग्रंथ के क्रमशः द्वितीय और सप्तम अध्यायों में समाहित कर दिया है। शोधप्रबन्ध के प्रथम परिशिष्ट में तीन लोकगाथाएँ–बगड़ावत, पाबूजी और गोगाजी, अपने पूरे रूपों में थी, अब इन में से 'बगड़ावत' पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो गई है, 'पाबूजी' भी शोधप्रत्रिका, उदयपुर के वर्ष २०, अंक ३ में प्रकाशित हो गई है और 'गोगाजी' गाथा भी बीकानेर के श्री चंद्रदान चारण ने पुस्तकाकार संपादित कर दी है, मैं उन्हीं से लाया था । अतः इस परिशिष्ट के स्थान पर राजस्थानी लोकगाथाओं और उनके प्राप्ति स्थानों की सूची सम्मिलित कर दी गई है।

यह शोधप्रबन्ध सन् '६४ में स्वीकृत हुआ था। तब से अब तक लोकसाहित्य के अध्ययन-अध्यापन से जो दृष्टि मिली, उसका भी सम्यक् उपयोग इस ग्रंथ में कर दिया गया है। मोटिफ, कथानक रूढ़ि, हेतुकथा आदि के विषय में हिन्दी के लोकसाहित्य-अध्येता स्पष्ट नहीं हैं। मैंने यथा स्थान इन पर विचार किया है। जिन राजस्थानी लोकगाथाओं का अध्ययन मैंने यहाँ प्रस्तुत किया है, अब वे सभी किसी न किसी रूप में प्रकाशित हैं। अतएव उन्हीं संदर्भों का उपयोग इस ग्रंथ में किया गया है।

शोध प्रसंग में डॉ. कन्हैयालाल 'सहल', श्री नरोत्तम स्वामी, डॉ. नारायणसिंह भाटी ने कृपापूर्वक सामग्री दी, मार्गदर्शन सुलभ किया। इन विद्वद्वरों की साधना और शोध प्रेम के प्रति नत हूँ। शोध के ३ वर्षों में अनेक बार हतोत्साहित हुआ हूँ। इस स्थिति से उबारने वाले, राजस्थानी लोकनाटकों के विद्वान् अपने पिता के चरणों में ही मैंने इस ग्रंथ को समर्पित किया है।

राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा के निर्देशन में यह **शोधप्रबन्ध लिखा गया था।** डॉ. शर्मा के स्नेहपूर्ण आग्रहों से ही यह समय पर पूरा किया जा सका था। उनका आभारी हूँ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्रो. डॉ. वार्ष्णेय ने इस ग्रंथ को देखा है। श्रद्धेय डॉ. वार्ष्णेय के पितृतुल्य स्नेह को अभिव्यक्ति देने में मैं स्वंय को असमर्थ पा रहा हूँ।

अन्त में उन सभी गायकों के प्रति, जिनसे मैंने लोकगाथाएँ सुनी और लिखी, कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए यह 'राजस्थानी लोकगाथाएँ : एक विवेचन' लोक के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

भारतीय विद्या मन्दिर कोलकाता के निदेशक और 'वैचारिकी' के सम्पादक डॉ. बाबूलाल शर्मा और संस्थाध्यक्ष श्री बिट्ठलदास मूँधड़ा ने इसके प्रकाशन में रुचि ली, एतदर्थ आप दोनों को स्नेहाशीष। यह हर्ष का विषय है कि प्रकाशक संस्था भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण के हुतु से ग्रंथों का प्रकाशन करती है, अतः यह ग्रंथ अधिकाधिक सुधी पाठकों को हस्तगत होगा। इस महत उद्देश्य और ग्रंथ के सुन्दर प्रकाशन हेतु संस्था के प्रति आभार।

— डॉ. कृष्णकुमार शर्मा, डी. लिट्.

१-म ३४, गायत्री नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-५
उदयपुर-३१३००१ (राजस्थान)

●●●